Naidunia **Date: 19.11.2019**

EDUCATION PLUS

प्रगति को गति देने के लिए है गुंजाइश

वैष्णव यूनिवर्सिटी में नेशनल कांफ्रेंस 'उद्गम' आयोजित

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

मानव प्रगति अंतरराष्ट्रीय मानकों से धीमी रही। देश के भीतर मानव प्रगति में विविधता काफी व्यापक बनी हुई है। प्रगति को गति देने के लिए हमारे पास पर्याप्त गुंजाइश है। यह कहना है आईसीएसएसआर भोपाल के डॉ. आलोक रंजन चौरसिया का। सोमवार से वैष्णव यूनिवर्सिटी ऑफ सोशल साइंसेस ह्यूमेनिटीज एंड ऑर्ट्स संस्थान ने उज्जैन रोड स्थित कैंपस में तीन दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस उद्गम की शुरुआत की। इसमें डॉ. आलोक मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद थे। उन्होंने भारत में मानव विकास के 25 साल के संदर्भ में स्थिरता के बारे में बात की। समारोह के मुख्य अतिथि पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ की डॉ. विधु मोहन थी और विशिष्ट अतिथि रोहतक यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रो. डॉ. बी के नगला थे।

वैष्णव यूनिवर्सिटी में नेशनल कांफ्रेंस में उपस्थित अतिथि। ● **फोटो सौजन्य : संस्था**

सतत विकास और नियोजन एक अच्छा मंच हो सकता है

डॉ. संतोष धर ने समारोह उद्गम के बारे में जानकारी दी। वैष्णव यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. उपिंदर धर ने ग्रोथ ग्लोबल डेवलपमेंट से किस तरह जुड़ी है विषय पर बात की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे मानव सूचकांक और स्थिरता का परस्पर संबंध है। कैसे समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए सतत विकास और नियोजन एक अच्छा मंच हो सकता है। डॉ. नगला ने सामाजिक विकास की अवधारणा और वर्तमान प्रतिमान स्थिरता की धारणा व्यावहारिक रूप से कैसे जुड़े हैं इस बारे में बात की। डॉ. विधु मोहन ने आत्म विकास कौशल को बढ़ाने के विषय में कहा कि संघर्ष प्रबंधन को हल करने के लिए 3-एफ फाइट, फ्लाइट और फेस पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

Dainik Bhaskar Date: 19.11.2019

विशेष | श्री वैष्णव विद्यापीठ यूनिवर्सिटी में शुरू हुई नेशनल कॉन्फ्रेंस में बोले डॉ. आलोक रंजन

९0% लोग अपनी गाड़ियों से ऑफिस जाते हैं, व्हीकल पूलिंग करते हुए साथ क्यों नहीं जाते, इंदौर शुरुआत करे, ट्रैफिक भी कम होगा

सिटी रिपोर्टर. इंदौर

'पूरे ब्रह्मांड में या यूं कहें अब तक साइंस की नजर जहां तक गई है कि उनमें अभी तक पृथ्वी ही ऐसी जगह है, जहां जीवन है। इसका कारण है कि यहां पर जीवन के लिए जरूरी सभी तत्व मौजूद हैं। वेदों में पांच तत्व गिनाए गए हैं क्षितिज, जल, पावक, गगन, समीर। धरती हमें खाने के लिए देती है। बिना पानी जीवन संभव नहीं है। पावक यानी एनर्जी की जरूरत हमें है। गगन यानी एटमॉस्फियर, सांस लेना जरूरी है। जीवन बनाए रखने के लिए मानव विकास जरूरी है। मनुष्य के अंदर यह क्षमता होनी चाहिए कि इन्हें कैसे प्रोटेक्ट करें। कमरे से बाहर जाएं तो लाइट बंद कर के निकलें। पानी गंदा न करें। पृथ्वी को बचाने के लिए रासायनिक खाद का उपयोग बंद हो। हवा साफ हो, एनर्जी बराबर मिले। इन पांच तत्वों को मेंटेन रखेंगे तो जीवन बना रहेगा।'

इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च भोपाल के डॉ. आलोक रंजन चौरसिया ने श्री वैष्णव यूनिवर्सिटी में सोमवार से शुरू हुई नेशनल कॉन्फ्रेंस में कहीं। तीन दिन तक चलने वाले इस सम्मेलन के पहले दिन सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए सामाजिक और मीडिया की भूमिका पर बोलते हुए डॉ. आलोक रंजन ने कहा - देश में मानव विकास की स्थिति ठीक नहीं है। 25 साल के अंदर मानव विकास में कुछ भी तरक्की नहीं हुई है। मध्यप्रदेश की स्थिति तो देश में पांच सबसे खराब राज्यों में है। नियम, कानून कुछ भी बना दीजिए, जब तक मानव विकास की बात नहीं करेंगे, जीवन बनाए रखना संभव नहीं होगा। बेंगलुरु की एक कॉलोनी का उदाहरण देते हुए बोले कि वहां के लोगों का कहना है पैसा ले लीजिए, लेकिन पानी दीजिए। क्या पैसे से पानी लिया जा सकता है। जरूरी है इसका बचाना। पैसा सब कुछ नहीं है। मनुष्य की क्षमता विकसित करना होगी। अधिकतर दफ्तरों में लोग अपनी-अपनी गाड़ी से जाते हैं तो क्या लोग व्हीकल पूलिंग नहीं कर सकते। यदि आप तैयार ही नहीं है तो सस्टेनेबिलिटी कहां से आएगी। कुछ करना होगा। इंदौर में तो ट्रैफिक की समस्या बहुत बड़ी है। यहां कार पूलिंग की शुरुआत क्यों नहीं की जाती? यह शहर कई नवाचार कर चुका है।

Dainik Chetanay Lok **Date: 19.11.2019**

सतत विकास के लिए प्रतिमान बदलाव : सामाजिक विज्ञान, मानविकी, ललित कला, पत्रकारिता और जन संचार में चुनौतियां और अवसर

चैतन्य लोक » इंदौर

dainikchaitanyalok.com

श्री वैष्णव इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स ने अपने इंदौर-उज्जैन रोड परिसर में राष्ट्रीय सम्मेलन 'उद्गम'-2019 का आयोजन किया। तीन दिवसीय सम्मेलन 18 नवंबर को उद्घाटन समारोह के साथ शुरू हुआ। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से डॉ. विधु मोहन थी। मुख्य वक्ता आईसीएसएसआर, भोपाल से डॉ. आलोक रंजन चौरसिया थे और विशिष्ट अतिथि रोहतक विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. बीके नगला थे।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्जवलित कर की गई। उद्घाटन सत्र में डॉ। संतोष धर ने उदगम के बारे में दर्शकों से परिचय किया। एसवीवीवी के वाइस चांसलर डॉ। उपिंदर धर ने अपने भाषण की शुरुआत इस विषय के बारे में बताते हुए की और बताया कि किस तरह ग्रोथ ग्लोबल डेवलपमेंट से जुड़ी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे मानव सूचकांक और स्थिरता का परस्पर संबंध है और कैसे समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए सतत विकास और नियोजन एक अच्छा मंच हो सकता है। इस मुख्य वक्ता को डॉ. आलोक रंजन चौरसिया, आईसीएसएसआर

ने दर्शकों को संबोधित किया और अपने विषय 'भारत में मानव विकास के पच्चीस साल' के संदर्भ में स्थिरता के बारे में आगे बताया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मानव प्रगति अंतर्राष्ट्रीय मानकों से धीमी रही और देश के भीतर मानव प्रगति में विविधता काफी व्यापक बनी हुई है और प्रगति को गति देने के लिए पर्याप्त गुंजाइश है। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि डॉ. बीके नगला पूर्व प्रो. रोहतक विश्वविद्यालय, ने सामाजिक विकास की अवधारणा और कैसे वर्तमान प्रतिमान स्थिरता' की धारणा और व्यावहारिक रूप जुड़े हुए है। नेशनल कांफ्रेंस के मुख्य अतिथि, पंजाब विश्वविद्यालय से डॉ. विधु मोहन ने इस विषय पर चर्चा की, 'अच्छी तरह से आत्म विकास कौशल को बढ़ाना। संघर्ष प्रबंधन को हल करने के लिए 3 एफ-फाइट, फ्लाइट और फेस पर अधिक ध्यान दिया और मास्लो के पदानुक्रम के माध्यम भी चर्चा की। उद्घाटन समारोह का पालन प्लेनरी सत्रों द्वारा किया गया था। अपने बहुमूल्य विचारों के साथ पहले दिन के सत्र को समृद्ध करने वाले प्रतिष्ठित वक्ता थे, डॉ. ऋचा (पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला), डॉ. दिनेश नागर (प्रोफेसर और हेड बीयू, भोपाल), डॉ. सरोज कोठारी (प्रो और हेड साइकोलॉजी, सरकारी पीजी कॉलेज)। अगले दिन पूर्ण सत्र के लिए वक्ता डॉ. बीके नगला, पूर्व प्रोफेसर रोहतक विश्वविद्यालय, डॉ. नीलम हिंगोरानी, सेवानिवृत्त प्रो. डीएवीवी, इंदौर होंगे।

दैनिक भास्कर
20-Nov-2019
Page 2

भारत का हेल्थ जीडीपी 1 यूरोप का 9 फीसदी, लैंगिक असमानता भी यहां ज्यादा है, लेकिन समाज के सकारात्मक पहलू देखना भी ज़रूरी

वैष्णव यूनिवर्सिटी की नेशनल कॉन्फ्रेंस में सस्टेनेबल डेवलपमेंट पर बोले एक्सपर्ट्स

सिटी रिपोर्टर. इंदौर

'भारत का हेल्थ जीडीपी एक फीसदी है जो यूरोपियन देशों के मुकाबले काफी कम है। यूरोप में यह आंकड़ा नौ पर है। हमारे यहां लैंगिक असमानता भी है, लेकिन समाज के सकारात्मक पहलु देखने की भी ज़रूरत है। अब चीजें बेहतर हो रही हैं। महिलाएं प्रभावशाली बन रही हैं। हर क्षेत्र में आगे आगे हैं।' श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन मंगलवार को वक्ताओं ने ज्ञान और सामाजिक जागरुकता, लैंगिक असमानता जैसे विषयों पर बात की। रोहतक यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर डॉ. बी के नागल बोले - महिलाएं लगातार प्रगतिशील हो रही हैं और उन्होंने अपनी सूक्ष्मता को साबित भी किया है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी की रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ. नीलम हिंगोरानी ने कहा कि स्वस्थ और मजबूत समाज महिलाओं का सशक्त होना जरूरी है। सामाजिक कुरीतियां भी इस व्यवस्था को नुकसान पहुंचाती है। पूर्व प्रोफेसर डॉ. नीलम कोठारी ने भी संबोधित किया। डीएवीवी के इकोनॉमिक्स हेड और प्रोफेसर डॉ. गणेश कावड़िया, विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन के प्रोफेसर डॉ. धर्मेंद्र मेहता, डीएवीवी के डॉ. कन्हैया आहुजा ने भी सस्टेनेबल डेवलपमेंट पर विचार रखे।

Patrika   Date: 20.11.2019

सामाजिक कुरीतियों को मिटाने पर जोर

समय के साथ समाज में बढ़ रहा महिलाओं का प्रभाव

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में चल रहे उद्गम के दूसरे दिन भी ज्ञान और सामाजिक जागरूकता के लिए उत्साह जारी रहा। यह दिन काफी आकर्षक था क्योंकि दूसरे भाग में प्रतिभागियों की ओर से कागजी प्रस्तुतियों के साथ दो पूर्ण सत्रों की योजना बनाई गई थी। पहला सत्र डीएवीवी की सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. नीलम कोठारी द्वारा लिया गया। उनका विषय लैंगिक असमानता और सतत विकास के आसपास था। उन्होंने बताया कि भारत की स्वास्थ्य जीडीपी 1 प्रतिशत पर है और अन्य यूरोपीय देशों से पिछड़ रही है जो 9 प्रतिशत है। उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने की बात कही और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के उपाय सुझाए। सत्र की आगे की कार्यवाही सत्र के अध्यक्ष डॉ. बी. के. नगला द्वारा की गई। उन्होंने दर्शकों को समाज के सकारात्मक पहलू को देखने के लिए प्रेरित किया जहां चीजें बेहतर हो रही हैं और महिलाएं प्रभावशाली बन रही हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के उदाहरणों का हवाला दिया, जहां उन्होंने महिलाओं को अपनी उम्र के बढ़ने के साथ प्रगतिशील होते हुए देखा और अपनी सूक्ष्मता को साबित किया। इस अंतर को समाप्त करने के लिए प्रत्याशा को विकसित किया जाना चाहिए और इस बदलाव को लागू करने के लिए निर्णय लेने को मजबूत बनाया जाना चाहिए। यह सत्र प्रश्न औ उत्तर के दौर के साथ समाप्त हुआ जहां छात्रों और प्रतिभागियों न लैंगिक असमानता, कॉलेजों म आरक्षण और महिलाओं के अपन स्वयं के विकास में प्रतिगामी परिप्रेक्ष्य से संबंधित प्रश्न पूछे।

Dabang Dunia **Date: 20.11.2019**

एमपी देश का सबसे बड़ा निर्यातक, इसे और आगे बढ़ाने की आवश्यकता

दबंग रिपोर्टर ■ इंदौर

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस 'उद्गम' के दूसरे दिन भी ज्ञान और सामाजिक जागरूकता के प्रति उत्साह जारी रहा। यह कार्यक्रम दो सेशन में हुआ, जिसमें पहले सत्र में सेवानिवृत्त डॉ. नीलम कोठारी ने लैंगिक असमानता और सतत विकास के बारे में कहा कि भारत की स्वास्थ्य जीडीपी 1 प्रतिशत पर है, जो अन्य यूरोपीय देशों से पिछड़ रही है, जो 9 प्रतिशत हैं।

डॉ हिंगोरानी ने महिलाओं को सशक्त बनाने की बात कही और सामाजिक कुरीतियां मिटाने के उपाय सुझाए। रोहतक विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. बीके नगला सत्र के अध्यक्ष थे। उन्होंने बताया कि समाज के सकारात्मक पहलू को देखें, जहां चीजें बेहतर हो रही हैं और महिलाएं प्रभावशाली बन रही हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के उदाहरण देते हुए कहा कि इस अंतर को समाप्त करने के लिए विकसित सोच के साथ मजबूत निर्णय लेना चाहिए। सत्र के दौरान प्रश्नोत्तर प्रक्रिया भी हुई, जिसके सभी जवाब संतोष जनक रहे।

जल का संरक्षण करना बहुत जरूरी

दूसरे सत्र के वक्ता उज्जैन से आए विवि के डॉ. धर्मेंद्र ने जल अर्थशास्त्र और सतत विकास पर कहा कि पानी एक सार्वजनिक और निजी उत्पाद है, जिसे खपत करने के साथ संरक्षण करना भी चाहिए। उन्होंने प्राकृतिक, संसाधनों के संरक्षण पर जोर दिया। डीएवीवी के एसओई डॉ. कन्हैया आहुजा ने कृषि स्थिरता पर प्रस्तुति दी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि एमपी देश का सबसे बड़ा निर्यातक है, लेकिन इसे और भी आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और इसलिए हमें इस क्षेत्र से संबंधित चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। सत्र के अध्यक्ष डीएवीवी के ईको हेड और प्रो. डॉ. गणेश कावड़िया ने अंत में फिर से वैश्वीकरण और इसके आसन्न आर्थिक संकट से संबंधित बिंदुओं की जानकारी दी और इस तरह के मामले सुलझाने के लिए रामबाण अपील की। इसके अलावा दो समवर्ती सत्रों की योजना बनाई गई थी और शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों द्वारा 22 पत्र प्रस्तुत किए गए थे। पहले समवर्ती सत्र में ग्यारह पेपर प्रस्तुत किए गए और अगले सत्र में अन्य 11 पहले समवर्ती सत्र की अध्यक्षता एसवीआईएस के निदेशक डॉ. गुरुप्रसाद सिंह ने की। दूसरे समवर्ती सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजीव शुक्ला ने की।

Chaitanya Lok **Date: 20.11.2019**

देश की स्वास्थ्य जीडीपी यूरोपीय देशों से पिछड़ रही

चैतन्य लोक » इन्दौर
dainikchaitanyalok.com

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय में सामाजिक विज्ञान, मानविकी, ललित कला, पत्रकारिता और जन संचार में चुनौतियां और अवसर उद्गम 2019 के दूसरे दिन भी ज्ञान और सामाजिक जागरूकता के लिए उत्साह जारी रहा। यह दिन काफी आकर्षक था क्योंकि दूसरे भाग में प्रतिभागियों की ओर से कागजी प्रस्तुतियों के साथ दो पूर्ण सत्रों की योजना बनाई गई थी। पहला पूर्ण सत्र डॉ. नीलम कोठारी सेवानिवृत्त द्वारा लिया गया था। प्रोफेसर डीएवीवी इंदौर। उनका विषय लैंगिक असमानता और सतत विकास के आसपास था। उन्होंने बताया कि भारत की स्वास्थ्य जीडीपी 1 प्रतिशत पर है और अन्य यूरोपीय देशों से पिछड़ रही है जो 9 प्रतिशत हैं।

डॉ. हिंगोरानी ने महिलाओं को सशक्त बनाने की बात कही और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के उपाय सुझाए। सत्र की आगे की कार्यवाही सत्र के अध्यक्ष डॉ. बीके नगला पूर्व प्रो. रोहतक विश्वविद्यालय द्वारा की गई। उन्होंने बताया कि कैसे प्रक्रिया में लिंग जैविक है और रूप में सामाजिक। उन्होंने दर्शकों को समाज के सकारात्मक पहलू को देखने के लिए प्रेरित किया जहां चीजें बेहतर हो रही हैं और महिलाएं प्रभावशाली बन रही हैं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के उदाहरणों का हवाला दिया, जहां उन्होंने महिलाओं को अपनी उम्र के बढ़ने के साथ प्रगतिशील होते हुए देखा और अपनी सूक्ष्मता को साबित किया। इस अंतर को समाप्त करने के लिए प्रत्याशा को विकसित किया जाना चाहिए और इस बदलाव को लागू करने के लिए निर्णय लेने को मजबूत बनाया जाना चाहिए। यह सत्र प्रश्न और उत्तर के दौर के साथ समाप्त हुआ, जहां छात्रों और प्रतिभागियों ने लैंगिक असमानता, कॉलेजों में आरक्षण और महिलाओं के अपने स्वयं के विकास में प्रतिगामी परिप्रेक्ष्य से संबंधित प्रश्न पूछे। भागीदारी के लिए दिए गए जवाब बहुत संतोषजनक थे। अगले सत्र के सत्र अध्यक्ष डॉ. गणेश कावड़िया, प्रोफेसर और हेड (इको) डीएवीवी इंदौर द्वारा दिए गए शब्दों के साथ शुरू हुआ। सत्र के पहले वक्ता डॉ. धर्मेंद्र मेहता, प्रो। जेएनआईबीएम, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन ने जल अर्थशास्त्र और सतत विकास पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि पानी एक सार्वजनिक और निजी उत्पाद है। उन्होंने खपत और अधिशेष के सिद्धांत को भी साझा किया और प्राकृतिक, संसाधनों के संरक्षण पर जोर दिया। अगले स्पीकर डॉ. कन्हैया आहूजा प्रो। एसओई, डीएवीवी, इंदौर ने कृषि स्थिरता पर अपनी प्रस्तुति दी और बताया कि कृषि संरचना के संदर्भ में स्थिरता में कई लक्ष्य हैं। उन्होंने बताया कि कृषि विकास के लिए 4 प्रमुख क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं: सिंचाई, बिजली व्यवस्था, सड़क नेटवर्क और खरीद। डॉ. कन्हैया ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एमपी देश का सबसे बड़ा निर्यातक है लेकिन इसे और भी आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और इसलिए हमें इस क्षेत्र से संबंधित चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। अध्यक्ष डॉ. गणेश कावडिया ने अंत में फिर से वैश्वीकरण और इसके आसन्न आर्थिक संकट से संबंधित बिंदुओं की जानकारी दी और इस तरह के मामलों को सुलझाने के लिए रामबाण अपील की। इसके अलावा 2 समवर्ती सत्रों की योजना बनाई गई थी और शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों द्वारा 22 पत्र प्रस्तुत किए गए थे। पहले समवर्ती सत्र में ग्यारह पेपर प्रस्तुत किए गए और अगले सत्र में अन्य 11। पहले समवर्ती सत्र की अध्यक्षता एसवीआईएस के निदेशक डॉ. गुरुप्रसाद सिंह ने की। अपनी टिप्पणियों में, उन्होंने स्वीकार किया कि शोधकर्ताओं ने प्रासंगिक विषयों का चयन किया था। दूसरे समवर्ती सत्र की अध्यक्षता डॉ। राजीव शुक्ला, निदेशक एसवीएसएम ने की। अपनी टिप्पणियों में, उन्होंने कहा कि शोध पत्र प्रस्तुति जानकारीपूर्ण थे और गहरी अंतर्दृष्टि थी। उन्होंने शोध विद्वानों को अपने शोध कार्यों के साथ आगे बढ़ने के लिए एक सही दृष्टिकोण के साथ मार्गदर्शन किया। राष्ट्रीय सम्मेलन उद्गम का तीसरा दिन प्रथम सत्र में पूर्ण सत्र के साथ शुरू होगा। सत्र के अध्यक्ष प्रोफेसर, नलिनी रेवाडिकर, अध्यक्ष, एमपीआईएसएसआर, उज्जैन होंगी और वक्ता डॉ. एपीएस चौहान प्रो और प्रमुख, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर और डॉ. सीमा सोनी, प्रो. गर्ल्स पीजी कॉलेज देवास होंगी। राष्ट्रीय सम्मेलन, समापन समारोह के साथ संपन्न होगा। वैलिडेशन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. सोमनाथ घोष, पूर्व डीन होंगे। आईआईएम काशीपुर और अब्दुल अजीज अंसारी, पूर्व निदेशक आकाशवाणी, सम्मान के विशिष्ट अतिथि होंगे।